सुभाष चन्द्र बोस



— श्रीराम शर्मा आचार्य

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

VICHARKRANTI PUSTAKALAY
SURAT, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

स्वाधीनता के पुजारी—
सुभाषचंद्र बोस

महापुरुषों की अनेक श्रेणियाँ होती हैं। कोई विद्या, बुद्धि की दृष्टि से अग्रगण्य होते हैं, तो कोई परोपकार के लिए सर्वस्व अर्पण करने वाले होते हैं। कोई धर्म-कर्तव्य और आदर्श चरित्र की दृष्टि से अनुकरणीय होते हैं और कोई अन्याय के प्रतिकार एवं निर्बलों की रक्षा के लिए आत्म-बलिदान करने वाले होते हैं। इस प्रकार महापुरुष अनेक क्षेत्रों में कार्य करके मानवता की सेवा, सहायता, मार्गदर्शन करके अपने जीवन को सार्थक करते हैं और अन्य लोगों के सम्मुख एक ऐसा उच्च उदाहरण—आदर्श उपस्थित करते हैं, जिससे अनगिनत मनुष्य बहुत समय तक प्रेरणा प्राप्त करते रहते हैं।

नेताजी श्री सुभाषचंद्र बोस ऐसे ही महामानवों में से थे। उनको उच्च विद्या, बुद्धि, पदवी, पारिवारिक सुख, सार्वजनिक सम्मान सब कुछ प्राप्त था। अन्य अनेक माननीय और उच्च-पदवी पर प्रतिष्ठित व्यक्तियों के समान सुख-सुविधा का सार्वजनिक जीवन बिता सकना उनके लिए कुछ भी कठिन न था, पर इस सबका त्याग कर उन्होंने स्वेच्छा से ऐसा जीवन-मार्ग ग्रहण किया जिसमें पग-पग पर काँटे और खाई-खंदक थे। उनका त्याग और साहस इतना उच्चकोटि का था कि इसे देखकर हजारों व्यक्ति उनके सामने ही अपने देशवासियों को मनुष्योचित अधिकार दिलाने के लिए तन, मन, धन अर्थात् सर्वस्व अर्पण करने को तैयार हो गये। किसी ने सच ही कहा है कि वास्तविक प्रचार भाषणों, लेखों, वक्तव्यों से नहीं होता, वरन् जो कुछ कहा जाय, उसे स्वयं कार्यरूप में कर दिखाने का ही लोगों पर सबसे अधिक प्रभाव पड़ता है और साधारण व्यक्ति भी असाधारण कार्य करने को तैयार हो जाते हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जन्म और परिवार—

सुभाष बाबू के वंश का मूल निवास स्थान बंगाल का '२४ परगना' जिला है, पर उनके पिता श्री जानकीनाथ बहुत वर्षों तक कटक (उड़ीसा) में काम करते रहे और वहीं २३ जनवरी, १८९७ को उनका जन्म हुआ। उनके पिता आधुनिक अंग्रेजी शिक्षा के विशेष पक्षपाती थे, इसलिए उन्होंने अपने सब बच्चों को आरंभ से ही कटक के 'योरोपियन स्कूल' में शिक्षा दिलवाई और बाद में योरोप भेजकर उच्च शिक्षा की व्यवस्था की। सुभाष ने भी मैट्रिक तक की शिक्षा कटक में ही पाई, उसके पश्चात् कलकत्ता के प्रेसीडेंसी कॉलेज में दाखिल होकर बी० ए० पास किया। इसी बीच में एक बार वे किसी आध्यात्मिक गुरु की खोज में घर से बिना कहे चले गये और हरिद्वार, वृंदावन, काशी, बुद्ध गया आदि स्थानों में घूम-फिरकर वापस आ गये। इस यात्रा में उनको यही अनुभव हुआ कि इस समय देश में आध्यात्मिकता का ऊपरी ढाँचा मात्र रह गया है, उसका सार तत्त्व निकल गया है। जितने भी साधु-संन्यासियों से वे मिले, उन सबने उनको छोटे-बड़े ग्रंथों में पढ़ी हुई बातें तोते की तरह सुना दीं, पर व्यावहारिक जीवन में उनका कोई लक्षण न दिखाई दिया; और न देश, काल के अनुसार कोई महत्त्वपूर्ण कार्य करने की प्रवृत्ति किसी में जान पड़ी।

घर लौटने पर माता को इन्होंने बड़ी दुःखित अवस्था में देखा। इनके बिना कुछ कहे-सुने चले जाने और बहुत ढूँढ़ने पर भी उन्हें पता न लगने पर वह शोक से बीमार हो गई थी। उन्होंने बड़े क्षोभ से कहा—"तूने मेरी मृत्यु के लिए ही जन्म लिया था।" इन्होंने बहुत समझा-बुझाकर और फिर ऐसा काम न करने की प्रतिज्ञा करके उन्हें शांत किया। पिता का व्यवहार बहुत सहानुभूतिपूर्ण था। शोक तो उनको भी कम नहीं हुआ था, पर वे अपने पुत्र के उच्च विचारों और धर्म-भावना का मूल्य समझते थे। उन्होंने सुभाष के कार्य को बुरा नहीं कहा, पर उनकी सम्मति थी कि धर्म-साधन संसार में रहकर भी हो सकता है। फिर यदि संसार-त्यागकर संन्यासी जीवन व्यतीत ही करना हो तो उसके लिए कुछ तैयारी भी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

करना आवश्यक है। अच्छा यही है कि पहले सांसारिक कर्तव्यों का पालन करके और जीवन का अनुभव प्राप्त करके संन्यास के मार्ग पर पैर रखा जाये। सुभाष बाबू ने पिता की बातों को बड़ी श्रद्धा और सम्मान के साथ सुना और फिर अपना मत इस प्रकार व्यक्त किया—

(१) संसार में रहकर भी धर्म किया जा सकता है, पर सबके लिए एक ही नियम काम नहीं दे सकता, क्योंकि सबका योग और सामर्थ्य एक समान नहीं होती। अतएव प्रत्येक को उसकी प्रकृति और प्रवृत्ति के अनुसार ही मार्ग बतलाना पड़ता है।

(२) त्याग के लिए अभ्यास और तैयारी की बात ठीक है, पर विभिन्न लोगों के संस्कार पृथक्-पृथक् होते हैं और त्याग का आधार मुख्यतः मनुष्य के संस्कारों पर ही होता है।

(३) कर्तव्य का निर्णय भी सापेक्ष दृष्टि से करना पड़ता है। उच्च कर्तव्य-पालन की आवश्यकता उपस्थित होने पर निम्न कर्तव्य को दबा देना पड़ता है।

पिता ने फिर पूछा कि—"शास्त्रों में जो कहा गया है कि 'ब्रह्म-सत्य जगत् मिथ्या'—इसके संबंध में तुमने क्या समझा है ?" सुभाष ने कहा—"जब तक यह बात केवल मुख से कही जाती है तब तक वह एक सिद्धांत मात्र है, पर जब उसके अनुसार व्यवहार किया जाता है तब वह 'सत्य' है और उसे व्यवहार में लाया जा सकता है। जिन्होंने इस वाक्य को प्रचारित किया था, वे उसके अनुसार चलते भी थे और वे कह गये हैं कि अन्य सब लोग भी इस पर चल सकते हैं।" जब पूछा गया कि—"इसको कौन व्यवहार में लाया था और उसका प्रमाण क्या है ?" तो सुभाष ने उत्तर दिया—"प्राचीन ऋषि इस सिद्धांत के अनुसार आचरण करते थे। उन्होंने जो कहा है कि—**'वेदाहमेतं पुरुषं महान्तम"** (मैं उस परम पुरुष को जानता हूँ)—यही इसका प्रमाण है। इस समय भी विवेकानंद ने इस आदर्श को कार्यान्वित किया है और वही मेरा आदर्श है।" इस प्रकार पिता ने उस नवीन अवस्था में ही पुत्र की आत्म-त्याग और आत्म-समर्पण की मनोवृत्ति का परिचय प्राप्त कर लिया।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आध्यात्मिक-भाव की वृद्धि—

इस प्रकार किशोरावस्था में ही सुभाषचंद्र की मनोवृत्ति का झुकाव सांसारिक धन, वैभव पदवी के बजाय जीवन की वास्तविकता को जानने और अपनी शक्ति तथा सामर्थ्य का उपयोग देश की प्रगति के लिए करने की तरफ होने लगा। उनके मित्र उनको 'संन्यासी' के नाम से पुकारते थे, उनको इससे एक प्रकार की प्रसन्नता ही होती थी। इसी समय उन्होंने अपने जीवन के संबंध में विचार करते हुए एक पत्र में लिखा था—

"मैं दिन पर दिन अनुभव करता जाता हूँ कि हमारे जीवन का एक विशेष लक्ष्य या उद्देश्य है और उसी के लिए हम इस संसार में आये हैं। लोग तो इस संबंध में भला-बुरा कहते ही रहते हैं, पर मैंने निश्चय कर लिया है कि मैं प्रचलित विचारधारा में कभी नहीं बहूँगा। मैं अपनी सूक्ष्म अंतरात्मा में यह अनुभव करता हूँ कि मेरे ऊपर ऐसी भावना का प्रभाव नहीं पड़ सकता। यदि संसार के व्यवहार से प्रभावित होकर मैं अपने मन में दुःख, निराशा आदि का अनुभव करूँ तो मैं समझूँगा कि यह मेरी दुर्बलता है, पर जिसकी दृष्टि आकाश की तरफ लगी है, उसे इस बात का कुछ पता नहीं रहता कि सामने पहाड़ है या कुआँ है। इसी प्रकार जिसका लक्ष्य एक मात्र अपने उद्देश्य और आदर्श की तरफ होता है, उसका अन्य विषयों की तरफ ध्यान नहीं जाता। कुछ भी हो, अब मुझे यह अनुभव होता है कि हमको अपना मनुष्यत्व सार्थक करने के लिए तीन बातें करनी चाहिए—

(१) भूतकाल को साकार बनाना।

(२) वर्तमान काल को उत्पन्न करना।

(३) भविष्य काल का निर्माण करना।

"इन तीनों बातों की व्यवस्था इस प्रकार कि (१) मैं प्राचीन काल के समस्त इतिहास और संसार की समस्त सभ्यताओं का अध्ययन करूँगा। (२) मुझे अपना अध्ययन भी करना चाहिए—अपने चारों तरफ की दुनिया को अच्छी तरह समझना चाहिए। मुझे भारतवर्ष और दुनिया की वर्तमान अवस्था की पूरी जानकारी प्राप्त

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

करनी चाहिए और इसके लिए विदेशों की यात्रा करना आवश्यक है। (३) मुझे भविष्य-संदेशवाहक (प्रॉफेट) होना है, तो इसके लिए प्रगति के नियमों का पता लगाना आवश्यक है। पूर्वी और पाश्चात्य दोनों सभ्यताओं की प्रवृत्तियों को समझना जरूरी है, जिससे मनुष्य-जाति के भावी लक्ष्य को निर्धारित किया जा सके। इस संदर्भ में जीवन-दर्शन का अध्ययन और मनन करना भी सहायक होगा। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए हमको अपना कार्य भारतवर्ष से ही आरंभ करना चाहिए।"

"क्या यह एक महान् उद्देश्य नहीं है ? निःसंदेह इस विचार को कार्यान्वित करना बड़ा कठिन है, पर इसकी चिंता नहीं। हम सब मिलकर आगे बढ़ेंगे, तो सिद्धि प्राप्त होगी ही। हम अपनी दृष्टि को जितनी अधिक ऊपर की तरफ उठायेंगे, उतना ही हम भूतकाल के कटु अनुभवों को भूलते जायेंगे और तब भविष्यकाल पूर्ण प्रकाशयुक्त रूप में हमारे सामने प्रकट होगा।"

इससे श्री सुभाष की मानसिक अवस्था का बहुत कुछ पता चल जाता है। उनको छोटी आयु से ही यह अनुभव हो गया कि—मानव-जीवन केवल खाने-पीने और भोग करने के लिए नहीं है, वरन् भगवान् ने हम सबको इस जगत् में किसी उच्च आदर्श की पूर्ति के लिए भेजा है। प्रायः यह कहा जाता है कि 'मनुष्य संसार का सर्वश्रेष्ठ प्राणी है', पर यह सिद्धांत उसी समय चरितार्थ हो सकता है, जब हम धन-वैभव और सुख-सुविधा प्राप्त करने की सामान्य मनोवृत्ति को त्याग कर अपनी निगाह ऊपर की तरफ उठाते हैं। जब हम परमात्मा के आदेश का पालन करने के लिए अपने संकीर्ण स्वार्थ को छोड़कर त्याग और तपस्या द्वारा मानव-प्रगति में सहयोग देने के लिए आगे बढ़ेंगे तभी हम इस स्वर्णिम भविष्य को प्राप्त करने में सफल मनोरथ हो सकेंगे। इनका मनन करते-करते जब अपने देश और यहाँ के निवासियों की स्थिति को समझा तो उन्होंने फिर एक अन्य पत्र में अपनी भावनाओं को प्रकट करते हुए लिखा—

"जीवन-सरिता में दो परस्पर विरोधी स्रोत बहते रहते हैं। एक स्रोत मंगल (कल्याण) की तरफ ले जाता है और दूसरा स्रोत नीचे

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

की तरफ बहा ले जाता है। इन दोनों के साथ संघर्ष करते रहना ही जीवन का पुरुषार्थ है।"

"इस समय भारतवर्ष एक नये जीवन में प्रवेश कर रहा है। तमोमयी अंधेरी रात्रि का अवसान होकर मंगलमयी उषा का प्रकाश भारतीय गगन को सुशोभित कर रहा है। इस दृश्य को इस समय कौन भारतीय युवक नहीं देख रहा है और अनुभव नहीं कर रहा है? हम लोग धन्य हैं, जिन्होंने इस समय जन्म लिया है और वर्तमान 'अश्वमेध यज्ञ' की पूर्ति के लिए 'समिधायें' एकत्रित करने का सौभाग्य प्राप्त किया है। एक बार नेत्र खोलकर देखो कि पूर्वी आकाश में नवीन सूर्योदय की कैसी शोभा हो रही है ? चारों तरफ भविष्य द्रष्टा महापुरुष उच्च स्वर से शंखनाद करके आगामी प्रकाशयुक्त भविष्य का आवाहन कर रहे हैं। क्या तुम इसमें भाग लेने के लिए अपनी अंतरात्मा का स्वर नहीं मिलाओगे ?"

सुभाष बाबू के ये उद्‌गार निश्चय ही उनकी अंतरात्मा से निकल रहे थे। तभी आगे चलकर उन्होंने देशोद्धार के लिए इतना त्याग और साहसपूर्ण कदम उठाया, जिससे आज तक उनका यश देश भर में फैल रहा है। अपनी मातृभूमि और स्वदेश-बांधवों की कष्टपूर्ण अवस्था उनको उसी समय व्याकुल कर रही थी और उनका मन बार-बार कुछ करने के लिए उद्वेलित हो रहा था। पर वे समझते थे कि बिना पूरी तैयारी किये, बिना अपने को योग्य और शक्तिशाली बनाये हम कोई बड़ा काम नहीं कर सकते। इसीलिए आरंभ में ही उन्होंने संसार भर के इतिहास और सभ्यताओं के उत्थान-पतन के कारणों का अध्ययन और मनन करने का निश्चय किया। वे जैसे-जैसे इस मार्ग पर आगे बढ़ते गये, उनको अपने देश की वास्तविक दशा, उसके पतन के कारण और ऊँचा उठने के लिए भावी कार्यक्रम का ज्ञान होता गया। इससे उनकी अंतरात्मा निरंतर देश और समाज के प्रति अपना कर्तव्यपालन करने और अपने स्वार्थ का बलिदान करने के लिए छटपटाने लगी। वे बार-बार अपने साथियों को समझाते हुए इस प्रकार के प्रेरणादायक उद्‌गार प्रकट करने लगे—

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

"तुम फिर से मनुष्य बनो" किसी कवि की यह बात मुझे अत्यंत प्रिय जान पड़ती है, क्योंकि इसमें बड़े उच्च भाव का समावेश है। तुम्हारे मेरे—राम, श्याम, हरि, मोहन आदि के सम्मिलित होने से ही तो भारत बना है। यदि हम मनुष्य बन सकें तो भारत जाग्रत् हो जायेगा। भारत की कंकाल मात्र देह के भीतर अब भी प्राण धक-धक कर रहा है—भारत के उच्चकोटि के विचारक बार-बार यही बात हमको समझा रहे हैं। इसलिए अब सोच-विचार किस बात का है ? इतना अभाव, दुःख, दरिद्रता, पारस्परिक ईर्ष्या, द्वेष, कायरता आदि के होते हुए भी भारत के लिए मन में आशा का उदय होता है, इसका क्या कारण है ? यह कहा नहीं जा सकता।"

"इसलिए अपने आपको पहचान कर अपने कर्तव्य का पालन करो। तुमको जो शक्ति प्राप्त हुई है, उसको और विकसित करो। अपने हृदय को नवीन उत्साह से भरो—अपनी कल्पना पर नवीन आशा का आधिपत्य स्थापन करो—यौवन के आनंद और शक्ति को अपनी एक-एक नस में संचारित करो। इससे तुम्हारा आंतरिक जीवन सूर्य की किरणों से प्रकाशित मार्ग के समान सुस्पष्ट और विकसित बन जायेगा। तुम जीवन की पूर्णता अनुभव करके धन्य बनो, यह मेरी विनीत आकांक्षा और प्रार्थना है।"

हमें तरस आता है आजकल के अधिकांश नवयुवकों पर, जो जानते ही नहीं कि 'जीवन का उच्च आदर्श' क्या चीज होती है ? फिल्मों के अश्लील गीतों और सिगरेट आदि ने उनके मनुष्यत्व को प्रायः नष्ट कर डाला है और वे 'लैला-मजनूँ' बनने में ही अपने जीवन की सार्थकता समझते हैं। अगर कुछ जोश आया भी, तो वह गुंडागर्दी करने में ही खर्च होता है और आपस में ही छुरे-बाजी करना बड़ी वीरता का चिह्न माना जाने लगा है। वे सुभाष बाबू के उद्‌गारों को पढ़ें और समझें कि नवयुवकों के मनोभाव कैसे होने चाहिए और उनको किस प्रकार अपने जीवन को ऊँचा बनाना चाहिए ? जान पड़ता है, आजकल के युवकों के सामने जैसे कोई श्रेष्ठ आदर्श रह ही नहीं गया है और उन्होंने इंद्रिय-परायणता को ही सबसे बड़ा काम और जीवन का उद्देश्य मान रखा है। सुभाष

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बाबू का जीवन बतलाता है कि किस प्रकार उन्होंने घर में सब प्रकार की सुख-सामग्री होने पर भी, इन तुच्छ बातों की तरफ आँखें न उठाकर मानवता के लिए त्याग और बलिदान को ही मनुष्य जन्म का चरम फल माना और उसे कार्य रूप में परिणत कर दिखाया। वे स्वयं ही महानता के इस मार्ग पर अग्रसर नहीं हुए, वरन् अन्य भी हजारों व्यक्तियों को प्रेरणा देकर देशभक्त और स्वाधीनता का सैनिक बना दिया।

आज भी सुभाष के जीवन से हम अपने जीवन को उच्च और सार्थक बनाने की शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं। उन्होंने विश्व-विद्यालय की उच्च शिक्षा प्राप्त की, उस जमाने की सबसे बड़ी परीक्षा आई० सी० एस० पास की, पर अपना लक्ष्य सदा दूसरों के उद्धार और उपकार के लिए ही अपनी शक्ति और योग्यता का उपयोग करना मानते रहे और उसे बहुत अच्छी तरह पूरा करके दिखा दिया।

विदेश-यात्रा और राष्ट्रीय आंदोलन में योगदान—

तीर्थ-भ्रमण से लौटकर घर वालों की इच्छानुसार सुभाष बाबू ने फिर पढ़ना आरंभ कर दिया और इंटरमीडिएट की परीक्षा पास करके प्रेसीडेंसी कॉलेज में पढ़ने लगे। कॉलेज में पढ़ते उनको थोड़ा ही समय हुआ था कि वहाँ के एक अंग्रेज अध्यापक ने किसी भारतीय छात्र को गालियाँ दीं। जातीयता के अभिमानी सुभाष को यह सहन नहीं हुआ और उन्होंने समस्त विद्यार्थियों को संगठित करके कॉलेज में हड़ताल कर दी। इससे कॉलेज के अधिकारी, जो अधिकांशतः अंग्रेज ही थे, इनसे बहुत असंतुष्ट हुए। इन पर गाली देने वाले प्रोफेसर को पीटने का दोषारोपण किया गया और कॉलेज से निकाल दिया गया। इस पर सुभाष अपने पिता के पास कटक चले गये और वहीं दो वर्ष तक निवास करते रहे। अंत में श्री आशुतोष मुखर्जी के प्रयत्न से, जो उस समय कलकत्ता यूनीवर्सिटी के वाइस चांसलर थे, उनको फिर स्काटिश चर्च कॉलेज में पढ़ने की अनुमति मिली और सन् १६१८ में बी० ए० पास करके एम० ए० में दाखिल हो गये। घर वालों और पिता की इच्छा थी कि

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

वे विलायत जाकर आई० सी० एस० (इंडियन सिविल सर्विस अर्थात् उच्च सरकारी अधिकारी की परीक्षा) पास करें। सुभाषचंद्र सरकारी नौकरी के लिए बिल्कुल तैयार न थे, पर घर वालों के बहुत दबाव देने से विलायत चले गये। इसमें उनका एक उद्देश्य यह भी था कि विदेश यात्रा करके अपने ज्ञान और अनुभव को परिपक्व करें। वे अच्छी तरह जानते थे कि जब तक हम संसार की दशा का निरीक्षण करके विदेशियों की शक्ति और अपनी निर्बलता का कारण न समझ लेंगे, तब तक देशोद्धार का कोई प्रभावशाली उपाय किया जा सकना संभव नहीं है। इस विषय में उनके मनोभाव क्या थे, यह उनके अपने मित्र को लिखे एक पत्र से प्रकट होता है—

"मैं एक विषम समस्या में पड़ गया हूँ। कल ही घर से संवाद आया है कि मैं विलायत जाकर अध्ययन करूँ। मुझे इसी समय वहाँ की यात्रा करनी पड़ेगी, पर इस समय जाने से वहाँ की किसी नामी यूनीवर्सिटी में दाखिल हो सकने की आशा नहीं है। घर वालों की इच्छा तो यह है कि कुछ महीने पढ़कर आई० सी० एस० (सिविल सर्विस) की परीक्षा में बैठ जाऊँ। मेरी अपनी इच्छा यह है कि विलायत जाकर किसी अच्छी यूनीवर्सिटी की उपाधि प्राप्त करूँ, जिससे आगे चलकर मैं अपने देश के शिक्षा संबंधी क्षेत्र में काम कर सकूँ, पर यदि मैं इस समय घर वालों से यह कह दूँ कि मैं 'सिविल-सर्विस' की परीक्षा नहीं दूँगा, तो फिर मेरी विदेश-यात्रा का प्रस्ताव सदा के लिए समाप्त हो जायेगा। इस अवस्था में मैं इस अवसर को छोड़ दूँ या किसी प्रकार उसे स्वीकार कर लूँ, यह निश्चय नहीं कर पाता। फिर एक कठिनाई यह है कि यदि मैं 'सिविल-सर्विस' की परीक्षा में पास हो गया, तो क्या होगा ? सरकारी नौकरी कर लेने पर तो मेरा उद्देश्य ही समाप्त हो जायेगा।"

इस प्रकार घर वालों के आग्रह और विदेशों का अनुभव प्राप्त करने के उद्देश्य से श्री सुभाष विलायत-यात्रा के लिए सहमत हो गये और इंगलैंड पहुँचकर कैंब्रिज यूनीवर्सिटी में अध्ययन करने लगे, पर वहाँ भी आपका ध्यान 'सिविल सर्विस' की परीक्षा पास

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

करने के बजाय भारतीय समस्याओं की ओर ही अधिक था। इस संबंध में अपने एक पत्र में बतलाया था।

"यहाँ पर 'इंडियन मजलिस' नाम की भारतवासियों की एक संस्था है, जिसका प्रति सप्ताह एक अधिवेशन होता है और बीच-बीच में बाहर के प्रसिद्ध वक्ताओं को भी बुलाया जाता है। एक बार श्रीमती सरोजिनी नायडू ने 'युवकों का साम्राज्य' विषय पर भाषण दिया था। पिछली बार श्री पियरसन का व्याख्यान सुनने को मिला। मेरे आने से कुछ समय पहले ही तिलक महाराज भी इसमें पधारे थे। सरकार के इंडिया ऑफिस ने उसमें बाधा डालने की चेष्टा की थी, पर सफलता न मिल सकी। यहाँ रहने वाले भारतवासियों के विचार बड़े उग्र हैं। तिलक महाराज ने जब अपने विचार नर्मी के साथ प्रकट किये तो सबने उसका प्रतिवाद किया।"

"यहाँ के लोग बड़े उद्यमशील हैं। सबको समय की कीमत का ज्ञान है और काम करने का एक नियत ढंग है। ये लोग सब काम घड़ी की तरह नियत घंटा-मिनट पर करते हैं। ये लोग पक्के आशावादी भी हैं, जबकि हम जीवन में दुःखों के विषय में ही अधिक विचार करते हैं। ये लोग अधिकतर जीवन के सुख और प्रकाश के विषय में ही सोचते हैं। इनका सामान्य व्यावहारिक ज्ञान बड़ा प्रशंसनीय है और अपने जातीय हित को ये खूब समझते हैं। हम लोग अपने शरीर और स्वास्थ्य की तरफ भी बहुत कम ध्यान देते हैं। हमारे यहाँ विद्वान् समझे जाने वालों के मुख से भी प्रायः ऐसे उद्‌गार सुनने में आते हैं—"शरीर की ज्यादा चिंता करने से क्या लाभ, यह तो दो दिन के बाद मिट्‌टी में ही मिलेगा।" इस प्रकार की उदासीनता का भाव देशसेवकों के लिए तो कदापि उचित नहीं कहा जा सकता है। इस संबंध में हमारा आदर्श होना चाहिए—**'शरीरमाद्यं खलु धर्म साधनम्'** अर्थात् शरीर ही समस्त धर्म साधन का आधार है।"

शरीर की तरफ से लापरवाह रहना एक अपराध है। यह केवल अपने ही प्रति नहीं होता, वरन् देश के प्रति होता है। हमारे देश के युवकों की शारीरिक सामर्थ्य यदि छोटी उम्र में ही नष्ट हो जाये, तो हमको समझना चाहिए कि उनके भीतर कोई गलती या

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

संकीर्णता रह गई है। हममें से प्रत्येक को मन में यह भाव रखना चाहिए कि यह शरीर हमारा नहीं है, वरन् हम इसके एक 'ट्रस्टी' (संरक्षक) के समान हैं।"

एक सच्चा समाज हितैषी और मानव-सेवा का व्रतधारी ही संसार के अग्रणी और महान् माने जाने वाले देश में पहुँचकर, वहाँ की चमक-दमक और पचासों तरह के नये-नये आकर्षणों से बचकर अपने देश और छोटे-बड़े स्वदेश-बांधवों की इस प्रकार चिंता कर सकता है। सुभाष बाबू ने इंगलैंड में अंग्रेज जाति की उन्नति के कारणों पर ध्यान दिया और उनमें जो बातें उनको लाभदायक जान पड़ी, उनके विषय में तुरंत अपने भारतीय मित्रों को सूचित किया, ताकि कम से कम वे तो उनसे कुछ शिक्षा ग्रहण करके अपने को देश सेवा के अधिक उपयुक्त बनावें।

उन्होंने स्वास्थ्य-रक्षा के संबंध में जो कुछ लिखा, वह वास्तव में बहुत आवश्यक और उपयोगी है। देश-सेवा या समाज-सेवा केवल बातों से नहीं हो सकती और न मन में संकल्प या अभिलाषा करने से हो सकती है। जब तक हममें इस प्रकार की सेवा करने लायक योग्यता और शक्ति न होगी तब तक हम इस संबंध में कितनी ही चर्चा, परामर्श करें अथवा उत्साह दिखलायें, पर उसका कोई परिणाम नहीं निकल सकता, अगर मनुष्य का स्वास्थ्य ही ठीक नहीं है, वह रोगी बनकर चारपाई पर पड़ा रहता है या कोई परिश्रम का काम नहीं कर सकता, तो वह हार्दिक इच्छा रखने पर भी सेवा और परोपकार के मार्ग में कोई उल्लेखनीय कार्य कर नहीं दिखला सकता। शरीर यद्यपि एक भौतिक चीज है, पर वह आत्मा का आवास है और हमारी आत्मा और मन, बुद्धि भी अपनी अभिव्यक्ति के लिए उसी के आश्रित हैं। इसीलिए भारतीय ऋषियों ने 'धर्म-साधन' का एक प्रमुख उपकरण अथवा सहायक शरीर को भी बतलाया है। सुभाष बाबू के हृदय में देशभक्ति का जो सागर हिलोरें मार रहा था, वह तब तक अपना कुछ प्रभाव नहीं दिखला सकता था, जब तक कि वे उसके लिए आवश्यक परिश्रम और कष्ट सहन करने की शक्ति न रखते हों। इसलिए वे निरंतर इस तरफ दृष्टि रखते थे और अपने साथियों को भी सदा इसकी प्रेरणा देते रहते थे।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

नारी-जागरण का महत्त्व—

सुभाष बाबू का ध्यान भारतीय नारियों के जागरण की तरफ भी जाता रहता था। वे जानते थे कि किसी समाज का उद्धार केवल पुरुषों की चेष्टा से नहीं हो सकता। पुरुष यदि क्रांति, सशस्त्र-संग्राम द्वारा स्वाधीनता प्राप्त कर भी लें तो भी समाज की प्रगति—जो कि सब प्रकार की उन्नतियों का मूल मंत्र है, बिना नारी जागरण के नहीं हो सकती। इसीलिए जिस दिन 'इंडियन मजलिस' में श्रीमती नायडू का भाषण सुना, उसी दिन उन्होंने लिखा—"आज आनंद से मेरा कलेजा दस हाथ फूल गया। मैंने देखा कि आज भी भारत रमणी में इतनी शिक्षा, दीक्षा, गुण, चरित्र पाया जाता है कि वह पाश्चात्य जगत् के सामने खड़ी होकर आत्म-परिचय देने में समर्थ है। लंदन में ही एक दिन श्रीमती मित्र से बातचीत हुई। मैंने देखा कि उनके पति तो राजनीति में नर्म विचारों के हैं, पर श्रीमती मित्र पूर्णरूप से उग्रवादी थीं। श्रीमती धर भी गर्म दल की हैं। यह सब देखकर मन में विश्वास होता है कि जिस देश की महिलाओं का आदर्श इतना ऊँचा है, वह अवश्य उन्नति करेगा। यहाँ जितनी भारतीय महिलाएँ आती हैं, उन सबके हृदय में गंभीर स्वदेश-प्रेम पाया जाता है। कारण यही है कि मातृ-हृदय बड़ा कोमल और साथ ही गंभीर भी होता है।"

किसी भी देश तथा समाज के उत्थान के लिए नारियों का प्रगति क्षेत्र में अग्रसर होना एक अनिवार्य शर्त है। संतान-पालन के रूप में पुरुष-जाति का निर्माण तो उसका प्रत्यक्ष कार्य है ही, साथ ही गहरी निगाह से विचार करने पर यह भी स्पष्ट जान पड़ता है कि किसी जाति की संस्कृति और सभ्यता का विकास भी बहुत कुछ स्त्रियों पर निर्भर होता है। पुरुष तो प्रायः बाहर रहता है और शारीरिक श्रम करके जीवन-निर्वाह की सामग्री प्राप्त करता है, पर स्त्री घर में रहकर जीवन को सुंदर और सुरुचिपूर्ण बनाने का उद्योग करती रहती है। भारतीय संस्कृति में नारी को आदि काल से बहुत ऊँचा पद दिया गया है, उसको देवी और जगत्-जननी कहा गया है, वह इसी बात का प्रमाण है कि समाज में नारी की

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

स्थिति वास्तव में बड़ी महत्त्वपूर्ण है और जब तक वह अपना कर्तव्य भली प्रकार पालन कर सकने योग्य न होगी तब तक समाज की उचित प्रगति हो सकनी संभव नहीं।

राजनीतिक आंदोलन में—

सुभाष बाबू के घर वालों ने तो उनको विलायत इस आशा से भेजा था कि वे आई० सी० एस० की उच्च परीक्षा पास करके कोई बहुत बड़ी सरकारी नौकरी पायेंगे और अपने परिवार की समृद्धि और यश की रक्षा करेंगे, पर हुई इससे उलटी बात। विलायत जाकर वे अंग्रेजों की नौकरी करके उनको सहयोग देने के बजाय उलटे उनके कट्टर विरोधी बन गये। जिस समय वे विलायत में थे, उसी समय अंग्रेजी सरकार के अन्यायपूर्ण नियमों के विरुद्ध गांधी जी ने सत्याग्रह संग्राम छेड़ दिया और वकील, विद्यार्थी, सरकारी नौकर सबने सरकार के साथ असहयोग करके उसका संचालन कठिन बना देने की अपील की। जब सुभाष बाबू को यह समाचार मालूम हुआ तो वे सोचने लगे कि जब गांधी जी देश की मुक्ति के नाम पर देशवासियों का आह्वान कर रहे हैं, और उन्हें अन्यायी सरकार से असहयोग करने का आदेश दे रहे हैं, तो मैं किस प्रकार सरकारी नौकरी करके उनका सहायक बन सकता हूँ? यह बात अच्छी तरह उनकी समझ में आ गई और उन्होंने आई० सी० एस० की परीक्षा ऊँचे दर्जे में पास कर लेने पर भी और उसी समय एक बड़ी सरकारी नौकरी मिलने का निश्चय हो जाने पर भी, उससे त्यागपत्र दे दिया।

आई० सी० एस० की परीक्षा पास करके भी सरकारी नौकरी को छोड़ देने वाले सबसे पहले व्यक्ति सुभाष ही थे। उनके उदाहरण से अन्य अनेक युवकों पर भी बड़ा प्रभाव पड़ा और उन्होंने आई० सी० एस० की परीक्षा में बैठने का विचार त्याग दिया। अनेकों ने नौकरी पाकर भी उसे अस्वीकार कर दिया। सन् १९२१ की मई में उन्होंने आई० सी० एस० की परीक्षा पास की और उसी समय उसे त्यागकर भारत के राजनैतिक संग्राम में भाग लेने चल दिये। अनेक इष्ट-मित्रों और स्वयं ब्रिटिश सरकार के भारत

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मंत्री ने उनको ऐसा न करने के लिए बहुत समझाया, पर आपने अंग्रेजी सरकार की सेवा करके कलेक्टर या कमिश्नर बनने की बजाय मातृभूमि का सेवक बनकर गिरफ्तारी और जेल का जीवन अधिक श्रेयस्कर समझा।

उस समय बंगाल के नेता श्री चित्तरंजन दास थे। उन्होंने लाखों रुपये आमदनी की बैरिस्टरी को त्यागकर गाँधीजी के असहयोग आंदोलन में भाग लिया था और इस समय बंगाल में राष्ट्रीय भावना का जोरों से प्रचार कर रहे थे। सुभाष बाबू के त्याग का समाचार जानकर उनको भी बड़ी प्रसन्नता हुई और उन्होंने उनको नव स्थापित नेशनल कॉलेज का अध्यक्ष और अपने दैनिक समाचार पत्र का संचालक नियुक्त कर दिया। देशबंधु दास के त्यागमय जीवन से सुभाष बाबू और भी अधिक प्रभावित हुए और अपनी पूरी शक्ति के साथ आंदोलन में कूद पड़े। उन्होंने बंगाल के गाँव-गाँव में जाकर सरकार के अन्याय—अत्याचारों का वर्णन करना और लोगों को उसके साथ असहयोग की प्रेरणा देना आरंभ किया। उनका भाषण ऐसा ओजस्वी होता था कि हजारों विद्यार्थियों, वकीलों और सरकारी नौकरों ने सब कुछ छोड़कर आंदोलन में भाग लेना आरंभ किया। समस्त बंगाल में एक नवीन जाग्रति का दृश्य दिखाई पड़ने लगा और युवकगण विशेष रूप से सुभाष बाबू के अनुयायी बनकर सरकार की जड़ उखाड़ने में प्रवृत्त हो गये।

सुभाष बाबू के इस प्रकार बढ़ते हुए प्रभाव और आंदोलन की तीव्रता को देखकर सरकार डर गई। उसके कुछ ही समय पश्चात् देशबंधु दास और सुभाष दोनों को पकड़कर मुकदमा चला दिया। अदालत ने इनको ६ महीने की सादी कैद की सजा दी। सजा का हुक्म सुनकर सुभाष ने हँसते हुए कहा—"क्या मैंने मुर्गी की चोरी का अपराध किया है, जो इतनी कम सजा दी गई।" जेलखाने में सुभाष बाबू देशबंधु दास के साथ ही रहते थे और स्वयं भोजन बनाकर उनको खिलाया करते थे। वे श्री दास को अपना राजनीतिक गुरु मानते थे और उनके प्रति अत्यंत आदर और श्रद्धा का भाव रखते थे। दास बाबू भी उन्हें पुत्र की तरह स्नेह

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

करते थे और उनको आगे बढ़ाने के लिए निरंतर प्रयत्न करते रहते थे।

सन् १८२३ की गया कांग्रेस के अवसर पर कांग्रेस के नेताओं में कौंसिल-प्रवेश के प्रश्न पर मतभेद हो गया और देशबंधु दास तथा पं० मोतीलाल नेहरू ने 'स्वराज्य-पार्टी' की स्थापना की। सुभाष बाबू यद्यपि कौंसिल प्रवेश को देश के लिए विशेष हितकर नहीं मानते थे, पर देशबंधु दास के प्रधान सहकारी होने के कारण आपने उसमें भाग लिया और जब चुनाव का अवसर आया तो भाषणों और लेखों के द्वारा इतना अधिक प्रचार किया कि बंगाल में स्वराज्य पार्टी को बहुत अधिक सफलता मिली। इस समय 'फारवर्ड' और 'बाँगलार कथा' नामक दो दैनिक पत्रों की देखरेख का भार भी आप पर ही था। इन सब कार्यों में आपको इतना समय लगाना पड़ता था और परिश्रम करना पड़ता था कि कितने ही मित्रों के आग्रह करने पर भी वे स्वयं कौंसिल के लिए खड़े न हो सके।

समाज-सेवा और किसान-संगठन—

इस प्रकार परिस्थितियों के कारण सुभाष बाबू एक प्रसिद्ध राजनीतिक नेता बन गये, पर फिर भी उनका लक्ष्य केवल भाषण देना और लेख लिखना न हो सका। वे प्रत्यक्ष कार्यों में ही अधिक विश्वास रखते थे। इसलिए जब कांग्रेस की तरफ से एक वालंटियर सेना बनाई गई तो उसके अध्यक्ष सुभाष बाबू ही नियत किये गये। बंगाल के वालंटियर दल की तो पूरी व्यवस्था उन्हीं के हाथ में थी और जब उत्तरी बंगाल में भयंकर बाढ़ के कारण लाखों व्यक्ति बेघरबार हो गये और अपार कष्ट पाने लगे तो अपने वालंटियर दल द्वारा उन्होंने स्थान-स्थान पर जाकर सेवा कार्य आरंभ कर दिया। ये लोग पानी से घिरे लोगों को बाहर निकालकर लाते थे और उनके लिए भोजन-वस्त्र का प्रबंध करते थे। स्वयं सुभाष बाबू एक स्वयंसेवक की तरह सब तरह के कामों को अपने हाथ से करते थे। अन्य कार्यकर्ताओं पर इसका बहुत अच्छा प्रभाव पड़ता था और जनता भी उनके साथ पूरा सहयोग करने को तैयार रहती

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

थी। उन्होंने बाढ़-पीड़ितों की रक्षा का कार्य इतनी योग्यता और परिश्रम से किया कि सरकारी अधिकारियों को भी उनकी प्रशंसा करनी पड़ी।

सुभाष ने समाज-सेवा के विविध कार्यों को नियमित रूप से सदैव करते रहने के लिए एक 'युवक-दल' की स्थापना की थी। कुछ समय पश्चात् इस दल ने किसान आंदोलन का कार्य आरंभ कर दिया। यह प्रचार किया जाने लगा कि जमीन किसानों की है। जमींदारी प्रथा वर्तमान समय में अनुपयुक्त और अन्यायपूर्ण है। किसानों को अपनी जमीन में कुआँ खोदने, तालाब बनाने, मकान बनाने, पेड़ लगाने तथा काटने की स्वतंत्रता होनी चाहिए। इस प्रकार के आंदोलन से कांग्रेस के बड़े नेताओं को आपस में ही फूट पैदा हो जाने की आशंका हुई, इस कारण उन्होंने इसका विरोध भी किया। परंतु सुभाष बाबू अपनी धुन के पक्के थे, वे अपने मार्ग से नहीं हटे और किसानों के अधिकारों के लिए लगातार चेष्टा करते रहे।

इसी समय 'युवक दल' ने कलकत्ता कॉरपोरेशन के चुनाव में भाग लिया और सुभाषचंद्र बोस बहुमत से उसके सदस्य चुन लिए गये। आपकी योग्यता को देखकर कॉरपोरेशन के एक्जीक्यूटिव अफसर का पद आपको प्रदान किया गया। इस पद का वेतन उस समय तीन हजार रुपया प्रतिमास था, पर आपने केवल डेढ़ हजार लेना ही स्वीकार किया। इस पद का कार्य सँभालने पर आपने ऐसे अनेक युवकों को कॉरपोरेशन के दफ्तर में काम दिया, जो अब तक अपने उग्र राजनीतिक विचारों के कारण सरकार के कोपभाजन बने रहते थे। आप इस बात का भी सदा ध्यान रखते थे कि टैक्सों का भार गरीबों पर कम पड़े और उनको किसी प्रकार का कष्ट न हो। आपने नगर की स्वच्छता की तरफ विशेष रूप से ध्यान दिया, कम वेतन पाने वालों की तरक्की दी गई। यद्यपि आपको और भी अनेक कार्यों में थोड़ा-बहुत समय लगाना ही पड़ता था, तो भी कॉरपोरेशन का प्रबंध इतनी अच्छी तरह किया कि जनता को उनकी योग्यता और कर्मठता का पूरा विश्वास हो गया।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

देश निर्वासन और बीमारी—

सुभाष बाबू के प्रभाव को इस प्रकार बढ़ते देखकर सरकार को उनसे बड़ा डर पैदा हो गया। वे बड़े निडर और साहसी थे और अपने भाषणों में सरकार की कड़ी आलोचना करने में जरा भी संकोच नहीं करते थे। इसके फल से भारतीय प्रजा में विद्रोही-भाव उत्पन्न होते थे और अंग्रेजी सरकार का प्रभाव क्षीण होता था। दूसरी बात यह भी थी कि सरकार को अपने सी० आई० डी० विभाग (जासूसों) से यह खबर मिली थी कि सुभाष केवल कांग्रेस और युवक-दल का ही आंदोलन नहीं चलाते वरन् गुप्त रूप से बम और पिस्तौल चलाने वाले क्रांतिकारियों से भी छिपे तौर पर संबंध रखते हैं और उनकी सहायता करते रहते हैं। कुछ समय तक कलकत्ता की जेल में रखकर आपको मांडले (बर्मा) की जेल में भेज दिया गया, जहाँ इससे सोलह-सत्रह वर्ष पूर्व लाला लाजपतराय और लोकमान्य तिलक को रखा गया था। वहाँ पर न तो कोई आपका परिचित था और न वहाँ के लोगों की भाषा आप समझते थे। इसलिए उस एकांतवास में धार्मिक साहित्य पढ़ने लगे। आपका विचार पहले ही इन विषयों की तरफ था और आप लड़कपन में एक बार किसी संन्यासी गुरु की खोज में भटक भी चुके थे। इसलिए इस प्रकार के अध्ययन का प्रभाव आप पर बहुत कल्याणकारी सिद्ध हुआ।

पर बर्मा की जलवायु आपके लिए अनुकूल सिद्ध नहीं हुई और कुछ ही समय बाद अस्वस्थ रहने लगे। इसी समय देशबंधु दास की मृत्यु हो गई और इसका प्रभाव भी आपकी मानसिक अवस्था और स्वास्थ्य पर बहुत खराब पड़ा। रहन-सहन और खान-पान में बहुत परिवर्तन हो जाने से आपको कई प्रकार की उदर-व्याधि हो गईं और धीरे-धीरे निर्बलता इतनी बढ़ गई कि अधिकतर चारपाई पर ही पड़े रहने लगे। जब यह समाचार भारत में पहुँचा तो जनता में रोष की एक लहर व्याप्त हो गई और लोग सरकार पर दोषारोपण करने लगे कि वह देश के प्रसिद्ध नेताओं को इसी प्रकार जेल में घुला-घुला कर मार डालना चाहती है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सुभाष बाबू के घर वाले और इष्ट मित्र भी सरकार से लिखा-पढ़ी करने लगे, पर सुभाष बाबू के मन में उस समय भी एक आध्यात्मिक भाव प्रस्फुटित हो रहा था और साथ ही भारतीय जेलों के सुधार की योजना बन रही थी। उन्होंने उस समय अपने एक मित्र श्री दिलीपकुमार को लिखा था—

"तुमको मेरे जेल में रखे जाने से मानसिक आघात लगा, यह मैं अच्छी तरह जानता हूँ। पर जब हम इस विषय में गंभीर भाव से विचार करते हैं तो हमको यह एक आध्यात्मिक घटना की तरह जान पड़ती है। मैं यह तो नहीं कहता कि जेल में रहना मुझे पसंद है। ऐसा कहना तो स्पष्ट ढोंग होगा। इतना ही नहीं, मैं यह कह सकता हूँ कि कोई सज्जन और सुशिक्षित व्यक्ति जेल में रहना पसंद नहीं करेगा, क्योंकि जेल खाने की संपूर्ण आब-हवा ही ऐसी होती है कि वह मनुष्य को विकृत-अमानुष बना देती है। मेरा यह कथन समस्त जेलों पर लागू होता है। मेरा विचार है कि अधिकांश अपराधियों की जेल में नैतिक उन्नति नहीं होती, वरन् वे और भी हीन हो जाते हैं। कितनी ही जेलों में रहकर और वहाँ की दशा का निरीक्षण करने से उनके सुधार की आवश्यकता मुझे स्पष्ट जान पड़ने लगी है। भविष्य में इस संबंध में आवश्यक कदम उठाना हमारा कर्तव्य होगा।"

"इस व्यवस्था में सबसे आवश्यक बात है—एक नवीन मनोभाव और अपराधी के प्रति एक सहानुभूति। अपराधी में दोष को एक प्रकार की बीमारी ही समझना चाहिए और उसी भावना से उसका उपाय करना चाहिए। अभी तक जेलों में दंड-विधान का आधार वास्तव में 'प्रतिशोध-मूलक' है, अब हमको उसे 'संस्कार-मूलक' बनाने का प्रयत्न करना चाहिए।"

"मेरे मन में आता है कि मुझे स्वयं जेलों में रहना न पड़ा होता, तो मैं जेल में रहने वाले किसी अपराधी को सहानुभूति की दृष्टि से नहीं देख सकता था। इसलिए मेरी ऐसी धारणा बनती जाती है कि हमारे साहित्यिकों तथा कलाविदों को यदि जेल-जीवन की कुछ जानकारी होती, तो उनकी रचनाएँ इस दृष्टि से कहीं उच्चकोटि की हो सकती थीं।"

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

"जब मैं इस समस्त घटना पर गंभीरतापूर्वक विचार करता हूँ तो मेरे हृदय में यह धारणा उत्पन्न होती है कि मेरे इस समस्त दुःख और कष्ट सहन के पीछे एक महान् उद्देश्य छिपा है। प्रायः सभी सुशिक्षित व्यक्तियों की कारावास की दशा में इस प्रकार का एक दार्शनिक भाव, उनके हृदय में शक्ति का संचार करता रहता है। मैं भी ऐसा ही अनुभव कर रहा हूँ। अब तक मैंने जो पढ़ा व सुना है और जीवन के संबंध में मेरी जो धारणा है, उसके आधार पर अपने मनोबल को ऊँचा रख सकता हूँ, पर मेरा कष्ट केवल मानसिक अथवा आध्यात्मिक नहीं है, वह तो शरीर का कष्ट है। आत्मा तो प्रायः शक्तिशाली रहती है, पर देह समय-समय पर दुर्बल हो जाती है।"

"मैं अनुभव द्वारा इस निर्णय पर पहुँचा हूँ कि जेल में किसी लंबी मियाद वाले कैदी के लिए सबसे बड़ी विपत्ति यही है कि अनजान में ही उसके ऊपर अकाल-वार्द्धक्य (समय से पूर्व की वृद्धावस्था) का आक्रमण हो जाता है। तुम बाहर रहने वाले इस बात की कल्पना नहीं कर सकते कि लंबी कैद के फलस्वरूप मनुष्य की देह और मन धीरे-धीरे कैसे अकाल-वृद्ध हो जाते हैं। इसके कितने ही कारण होते हैं, जैसे—खराब भोजन, व्यायाम अथवा चलने-फिरने का अभाव, समाज से दूर रहना, पराधीनता का बंधन, इष्ट मित्रों का अभाव और संगीत आदि जैसे मनोरंजन का न होना।"

"इनमें से कुछ अभाव ऐसे हैं, जिनकी पूर्ति मनुष्य अपने भीतर से कर सकता है और कई ऐसे हैं, जो बाहर से ही पूर्ण हो सकते हैं। अलीपुर जेल में योरोपियन कैदियों के लिए सप्ताह में एक बार संगीत की व्यवस्था थी, पर भारतवासियों के लिए वैसी कोई व्यवस्था नहीं है। वन-भोज, हास्य-विनोद, संगीत-चर्चा, सभा-सम्मेलन, खुले मैदान में खेल-कूद, रुचि के अनुसार काव्य-साहित्य की चर्चा, ये समस्त विषय हमारे जीवन को कितना सरस और समृद्ध बना देते हैं, इस तथ्य को हम बहुत कम समझ पाते हैं। पर जब हमको जबर्दस्ती जेल में बंद कर दिया जाता है, तभी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उनका वास्तविक मूल्य ज्ञात होता है। जब तक जेलों में स्वास्थ्यजनक और उच्च सामाजिकता के नियमों का प्रचार न होगा तब तक कैदियों का सुधार-संस्कार होना असंभव है और तब तक जेलें उन्नति के पथ पर अग्रसर करने वाली बनने के बजाय आजकल की तरह अवनति के केंद्र स्वरूप ही बनी रहेंगी।"

वास्तव में अपराध और अपराधियों की समस्या बड़ी दुरूह है। विचारशील लोग यह स्वीकार करते हैं कि अधिकांश अपराध आजकल की विपरीत, अन्यायपूर्ण सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक परिस्थितियों के कारण होते हैं। अन्यथा एक तुच्छ से तुच्छ व्यक्ति भी जेल में बंद होकर तरह-तरह के कष्ट, यंत्रणा, असुविधा सहन करना पसंद नहीं कर सकता। इसलिए जैसा सुभाष बाबू ने लिखा है, अनेक सहृदय व्यक्तियों का यही मत है कि अपराधियों और जेल में बंद कैदियों के साथ वैसा ही व्यवहार किया जाना चाहिए जैसाकि किसी बीमार के साथ किया जाता है, अर्थात् उसके साथ जो व्यवहार किया जाए—उसमें दंड या प्रतिशोध की भावना बिल्कुल न रहे, पर उसने जिस कारणवश अपराध किया है, उस कारण को दूर करके मानसोपचार द्वारा उसके स्वभाव को बदलने की चेष्टा की जानी चाहिए। आदर्श और सिद्धांत की दृष्टि से इस विचार में कोई गलत बात नहीं है और हमारा विश्वास है कि एक समय आयेगा, जब यह सिद्धांत पूर्णरूप से व्यवहार में लाया जाने लगेगा।

यह आशा करना कि यह उद्देश्य आज या शीघ्र ही पूरा हो सकता है, ठीक नहीं। इस समय अनेक व्यक्ति वर्षों से अपराध करते-करते इतने कट्टर और निर्लज्ज बन गये हैं कि वे इस प्रकार के सहृदयता के भावों से भी प्रभावित नहीं होते और सौ में से नब्बे के उदाहरणों में उपकारी के साथ भी अपकार करने में संकोच नहीं करते। ऐसे स्वभाव से ही दुष्ट और समाज के लिए वन्य-पशुओं के समान खतरनाक लोगों को क्षमा कर देने या कुछ मानसोपचार करके स्वाधीनतापूर्वक रहने का अधिकार देना हानिकारक ही हो सकता है, ऐसे अपराधियों का सुधार क्रमशः ही हो सकेगा। श्री बर्नार्ड शा ने एक बार लिखा था कि, जो दुष्ट

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

व्यक्ति समाज के लिए सर्प और भेड़ियों की तरह भयंकर और स्वभावतः हानि पहुँचाने वाले हों, उनको वैज्ञानिक साधनों से शीघ्र से शीघ्र खत्म कर देना चाहिए, जिससे वे स्वयं कष्ट पाने और दूसरों को कष्ट देने के बजाय शांतिपूर्वक दुनिया से विदा हो जायें।

कुछ भी हो, जेलों की समस्या निःसंदेह समाज की सुख-शांति और भावी प्रगति के लिए विशेष महत्त्वपूर्ण है और स्वयं बीमार रहते हुए भी उस पर इतनी गहराई के साथ विचार करना यह प्रकट करता है कि सुभाष बाबू ने वास्तविक रूप में अपन जीवन समाजोत्थान के लिए समर्पित कर दिया था और वे प्रत्येक दशा में उसकी समस्याओं को सुलझाने के संबंध में चिंतन करते रहते थे। उनकी सम्मति थी कि 'जेल' जैसी संस्था को—मनुष्य चाहे तो, आध्यात्मिक विचारधारा द्वारा निश्चित रूप से सुधार और उत्थान का साधन बनाया जा सकता है—

"मैं इस निर्णय पर पहुँचा हूँ कि यदि जेलों में अत्याचार और अपमान का व्यवहार बंद हो जाय तो वहाँ रहना बुरा न जान पड़ेगा। पर इनके अतिरिक्त जो मानसिक आघात जेल में अनुभव होते हैं, वे वास्तव में किसी अदृश्य शक्ति द्वारा ही प्रेरित होते हैं, जेल के अधिकारियों का जान-बूझकर उनमें कोई हाथ नहीं होता। यदि मनुष्य के भीतर आध्यात्मिक भाव जाग्रत् कर दिया जाए, तो वह इस प्रकार के कष्टों और अरुचिकर व्यवहार से आत्म-सुधार की प्रेरणा ग्रहण कर सकता है। जेल-जीवन से उसे ज्ञात हो जाता है कि यह संसार केवल मौज-मजा उठाने का स्थान नहीं है, वरन् इसका आंतरिक स्वरूप बड़ा कठोर और आनंद से रहित है। यह प्रेरणा मनुष्य को स्वार्थ से परमार्थ की ओर प्रेरित करने में बहुत उपयोगी हो सकती है।"

संसार में प्रत्येक पदार्थ के दो पहलू होते हैं और वही बात जेलखानों पर लागू होती है। एक व्यक्ति उसे कष्ट, उत्पीड़न और अमानवीयता का घर समझकर भयभीत होता है अथवा वहाँ जाकर इसी प्रकार का नर-पशु बन जाता है। दूसरा व्यक्ति जो संसार के सब कार्यों में परमात्मा का हाथ देखता है, जेल-जीवन का उपयोग

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बहुत अच्छी तरह से आत्म-सुधार के लिए कर सकता है। बाह्य दृष्टि से देखने पर भी जेल में मनुष्य का जीवन जैसा नियमित, समयानुसार प्रत्येक कार्य करने का अभ्यस्त और संयमपूर्ण बन जाता है, वैसा गृह-जीवन में बड़ी कठिनता से हो सकता है। यही कारण है कि जहाँ निर्बल मन और बिगड़ी हुई आदतों के व्यक्ति वहाँ जाकर रोते-धोते रहते हैं और किसी प्रकार मर-गिरकर वहाँ से निकलते हैं, वहाँ एक विचारशील व्यक्ति उसमें रहकर अपनी शारीरिक और मानसिक दशा को पहले से अधिक उन्नत बना लेते हैं और कितने ही उपयोगी कार्य संपन्न कर सकते हैं।

जब तक मानव-प्रकृति जड़-मूल से बिल्कुल नहीं बदल जाती, तब तक जेल जैसी संस्था की आवश्यकता सर्वत्र खत्म नहीं हो सकती। यह अवश्य है कि वर्तमान राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक नियमों में से विचारशीलता तथा न्यायपरायणता का समावेश हो जाने से अपराधियों की संख्या बहुत घट सकती है, तो भी मानव-प्रकृति की त्रुटियों के कारण कुछ अपराध होते ही रहेंगे और जेल जैसी किसी संस्था की आवश्यकता बनी ही रहेगी। इसलिए जेलों की समस्या पर ध्यान देना और उनमें प्रचलित अन्याय और अनाचार को मिटाकर उन्हें वास्तविक सुधार का स्थल बना देना समाज हितैषियों का एक महत्त्वपूर्ण कर्तव्य है।

देशबंधु दास के प्रति श्रद्धांजलि—

जैसा आरंभ में लिखा जा चुका है, श्री सुभाषचंद्र को देश के राजनीतिक क्षेत्र में प्रवेश करने की प्रेरणा देने और बाद में मार्गदर्शन करके एक उच्च श्रेणी की नेता बनाने का श्रेय मुख्यतः देशबंधु चित्तरंजन दास का ही था। इसलिए जब उनके आकस्मिक देहावसान का समाचार मांडले जेल में मिला, तो सुभाषचंद्र की दशा एक वज्राहत वृक्ष की-सी हो गई। उस समय की अवस्था का वर्णन करते हुए उन्होंने एक पत्र में लिखा था—

"तुम जानते हो, आज के दिन हमारा मन किस भाव से आच्छन्न हो रहा है ? मेरा विश्वास है हम सबका ध्यान इस समय एक ही तरफ लगा है और वह है—महात्मा देशबंधु का देह त्याग।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जब मैंने अखबार में यह दारुण समाचार पढ़ा तो आँखों पर विश्वास न कर सका। पर हाय ! वह समाचार निश्चय ही एक निर्मम सत्य था। इसके परिणामस्वरूप समस्त बंगाली जाति का भाग्य लुट गया, यही कहना पड़ता है।"

"जो सब विचार इस समय मेरे मन में उथल-पुथल मचा रहे हैं, उनको प्रकट करके मन के शोक को कम करने का उपाय भी मेरे पास नहीं है, क्योंकि ये विचार इतने पवित्र व इतने मूल्यवान हैं कि उनको अनजान लोगों के सामने प्रकट नहीं किया जा सकता। पर मेरे सब पत्र तो सरकारी 'सेंसर' द्वारा पढ़कर ही भेजे जाते हैं, जो हमारे लिए एक अपरिचित व्यक्ति ही है।"

"इसके अतिरिक्त आज मेरा मन इतना विचलित और शोकाकुल हो रहा है और साथ ही मानसिक जगत् में मैं अपने को उस स्वर्गीय महात्मा के इतना निकट अनुभव कर रहा हूँ कि इस समय उनके गुणों पर ठीक-ठीक विचार करके कुछ लिख सकना बिल्कुल संभव नहीं है। मैंने उनके अत्यंत निकट रहकर आकस्मिक अवसरों पर उनकी जो छवि देखी है, उसका कुछ आभास समय आने पर दे सकूँगा, ऐसी आशा है।"

"साथ ही मैं यह भी स्वीकार करता हूँ कि इन बातों को अधिक कहने-सुनने से हमारे हृदय का शोक बढ़ता है। जीवन अधिकांश में एक 'ट्रेजेडी' (दुःखांत नाटक) है। यह हमारे ऊपर आने वाली इस शोकपूर्ण घटना से सिद्ध होता है। हम किसी प्रकार इसको शांत चित्त से सहन नहीं कर सकते। न तो हम इतने बड़े तत्त्वज्ञानी (दार्शनिक) हैं और न ऐसे ढोंगी हैं कि हम कह सकें कि चाहे कैसा भी कष्ट और दुःख आ जाय, हम उसको संतुलित भाव से सहन कर सकते हैं। बरट्रैंड रसेल ने कहा है कि—'जीवन निश्चय ही संपूर्ण रूप से एक ऐसा दुःखांत दृश्य है, जिससे सब कोई बचना चाहते हैं, मेरा विश्वास है कि केवल कोई निष्कलंक साधु अथवा साधुत्त्व का ढोंग करने वाला ही इस उक्ति का प्रतिवाद कर सकता है।"

"पर ऐसे भी कुछ व्यक्ति होते हैं, जो तत्त्वज्ञानी अथवा भावुक न होते हुए भी सब प्रकार की यंत्रणाओं को शांत भाव से

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सहन कर लेते हैं। ऐसे तत्त्वज्ञानहीन व्यक्ति अपना एक पृथक् ही 'आदर्श' बना लेते हैं और उसे बड़ा महत्त्वपूर्ण और श्रेष्ठ मानकर उसी की उपासना करते रहते हैं। वे तरह-तरह के दुःखों और यंत्रणाओं के साथ संघर्ष करते समय उसी 'आदर्श' से साहस और भरोसा प्राप्त करते हैं। यहाँ पर जेल में मेरे साथ अनेक ऐसे कैदी हैं, जो भावुक अथवा दार्शनिक नहीं हैं, तब भी वीरों की तरह सब कष्टों को शांत भाव से सहन कर लेते हैं। जेल के एक अधिकारी ने मुझे बताया कि फाँसी पाने वाले एक कैदी ने उसके सामने स्वीकार किया कि उसने वास्तव में एक व्यक्ति की हत्या की थी। जब उससे पूछा गया कि उस कार्य के लिए अब तुमको कुछ पश्चात्ताप होता है कि नहीं, तो उसने कहा कि—'मुझे बिल्कुल खेद नहीं है, क्योंकि उस व्यक्ति के विरुद्ध मेरा दोषारोपण न्याययुक्त था।' इसके बाद वह फाँसी के तख्ते पर खड़ा हुआ और प्राण दे दिये, पर उसके चेहरे पर एक शिकन भी नहीं आई। जेलखानों में ऐसे उदाहरण बहुत पाये जाते हैं।"

यह सत्य है कि अपराध करने वाले और जेल जाने वाले व्यक्तियों में से अनेक ऐसे होते हैं, जो अशिक्षित होने पर भी अच्छा चरित्र और ऊँचा मनोबल रखते हैं और किसी विशेष परिस्थिति में पड़कर ही वैसा दंडनीय कार्य कर बैठते हैं। ऐसे अपराधियों के साथ यदि विशेष व्यवहार किया जाय तो वे बहुत अच्छे और उपयोगी नागरिक बन सकते हैं। सुभाष बाबू ने इस संबंध में देशबंधु दास का एक उदाहरण दिया है। जब वे असहयोग आंदोलन के संबंध में जेल-जीवन व्यतीत कर रहे थे, तो उनको सेवा-कार्य के लिए एक कैदी दिया गया था। देशबंधु का हृदय बड़ा कोमल था, इसलिए उनका ध्यान इस कैदी की तरफ चला गया। वह कैदी एक 'पुराना पापी' था; आठ बार जेल की सजा काट चुका था। वह देशबंधु के प्रभाव से अनजान में ही बहुत कुछ बदल गया और अपनी इच्छा से ही उनके समस्त कार्यों को बहुत अच्छी तरह संपन्न करने लगा और एक प्रकार से उनका भक्त बन गया। जेल से छूटते समय देशबंधु ने उससे कहा कि—"जब वह अपनी सजा काटकर छुटकारा पाये तो अपने पुराने साथियों के पास न जाकर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उनके घर चला आवे।" कैदी ने इसे स्वीकार कर लिया और ऐसा ही किया। कुछ ही समय में उसका स्वभाव बदल गया और वह एक बहुत अच्छा कार्यकर्ता बन गया।

बंगाल के प्रसिद्ध उपन्यासकार श्री शरतचंद्र चट्टोपाध्याय ने देशबंधु दास के संबंध में एक लेख 'स्मृति कथा' 'वसुमती' (मासिक पत्रिका) में प्रकाशित कराया था। सुभाष बाबू ने उसे मांडले जेल में पढ़ा, तो वह उनको बहुत पसंद आया और उन्होंने वहीं से एक पत्र चट्टोपाध्याय महोदय को धन्यवाद देने के लिए लिखा। श्री शरतचंद्र ने देशबंधु के जीवन के प्रसंगों को प्रकट करते हुए लिखा था कि—"पराधीन जाति का एक बड़ा अभिशाप यह होता है कि हमको अपने मुक्ति-संग्राम में विदेशियों की अपेक्षा अपने देश के लोगों से ही अधिक लड़ाई करनी पड़ती है।" सुभाष बाबू ने भी इसका समर्थन करते हुए कहा—"यद्यपि यह एक कठोर सत्य है, पर हमारा रोम-रोम इसका अच्छी तरह अनुभव कर चुका है और अब भी कर रहा है।"

सन् १९२७ में गया कांग्रेस के समय देशबंधु दास की स्थिति अकस्मात् बहुत बदल गई थी। जो व्यक्ति बैरिस्टरी में प्रति वर्ष लाखों रुपया कमाता था और उसे उदारतापूर्वक लोगों की सहायतार्थ खर्च कर डालता था। इस समय राजनीतिक आंदोलन के संबंध में मतभेद हो जाने से छोटे-छोटे लोगों को भी उसकी निंदा-कुत्सा करने का अवसर मिल गया था। श्री शरतचंद्र ने उस स्थिति का वर्णन करते हुए लिखा था—"कोई सहायक नहीं है, धन नहीं है, अपने अधिकार में कोई समाचार-पत्र नहीं है। अत्यंत छोटे लोग भी बिना गाली बात नहीं करते—देशबंधु की यह कैसी दशा हो गई ? जब वे गया से लौटकर कलकत्ता आये तो बंगाल के सब अखबार असत्य और अर्द्धसत्य बातें लिखकर विरोधी प्रचार कर रहे थे। हमारे पक्ष की बात कहने वाला अथवा हमारे वक्तव्य को भी स्वेच्छापूर्वक स्थान देने वाला कोई समाचार-पत्र न था। जिस घर में एक समय बैठने को स्थान नहीं मिलता था, उसमें क्या मित्र और क्या शत्रु—किसी के पैरों की धूल नहीं पड़ती थी। फिर जब समय बदला तो बाहरी लोगों और पद प्राप्त करने के अभिलाषियों

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

की इतनी भीड़ वहाँ पर होने लगी कि अपने खास कार्यकर्ताओं को बात करने का मौका भी नहीं मिलता था।"

स्वार्थ में डूबी हुई दुनिया का यह एक स्पष्ट चित्र है, जिससे किसी प्रकार के लाभ की आशा होती है, अपना कोई मतलब पूरा होता जान पड़ता है, उससे लोग अनेक बहानों से जान-पहिचान निकालकर ठकुरसुहाती बातें करने लगते हैं और जब मतलब निकल जाता है अथवा वह स्वयं शक्तिहीन हो जाता है तो कोई उसकी तरफ आँख उठाकर भी नहीं देखता, पर देशबंधु दास इतने अधिक उदार और विशाल हृदय वाले महापुरुष थे कि लोगों की इस स्वार्थपरता को खूब अच्छी तरह समझते हुए और उनकी दुरंगी नीति को देखते हुए भी किसी को यथासंभव निराश नहीं करते थे। वे तन-मन-धन से प्रत्येक आगंतुक की अभिलाषा को परिस्थिति के अनुसार पूरा करने का प्रयत्न अवश्य करते थे। इस कार्य में उन्होंने प्रायः अपना सर्वस्व लगा दिया था और इसीलिए लाखों रु० प्रति वर्ष कमाने पर भी सदा सामान्य आर्थिक अवस्था में रहते थे।

स्वदेश प्रेम और कर्तव्य-भावना—

कलकत्ता की 'सेवक-समिति' के एक कार्यकर्ता श्री अनाथबंधु दत्त ने मांडले जेल में श्री सुभाष बोस को एक पत्र भेजा था, जिसमें अपनी श्रद्धा और सद्भावना प्रकट करते हुए लिखा था कि—"आज आप देश से दूर कर दिये गये हैं, इसलिए आपके प्रति हम सब लोगों का प्रेम पहले की अपेक्षा भी अधिक हो गया है।" इसका उत्तर देते हुए सुभाष बाबू ने लिखा था—"मुझे मांडले जेल में रहते हुए ११ महीना हुए हैं। कभी तो मन में आता है कि ये ११ महीने देखते ही देखते कट गये, और कभी ये कितने ही युगों के समान लंबे जान पड़ते हैं। इस समय अपने घरबार की बात मुझे स्वप्न की तरह जान पड़ती है और ऐसा प्रतीत होता है कि यह लोहे का फाटक और पत्थर की दीवारें ही एकमात्र सत्य हैं। कभी-कभी मेरे मन में आता है कि जिसने जेलखाना नहीं देखा उसने दुनिया में कुछ नहीं देखा। मैंने तो निश्चय ही जेलखाने में

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आकर बहुत कुछ सीखा है। अनेक 'सत्य' जो किसी समय छाया की तरह थे, यहाँ आकर बहुत स्पष्ट दिखाई देने लगे हैं। अनेक नवीन अनुभूतियों ने मेरे जीवन को सबल और गंभीर बना दिया है।"

"मुझे इस बात का तनिक भी दुःख नहीं है कि मुझे जेलखाने में रहना पड़ रहा है। 'माता' के लिए कष्ट सहना तो गौरव की बात है। कष्ट सहन करने में भी आनंद है। अगर ऐसा न होता तो लोग पागल हो जाते। यही कारण है कि अनेक समय कष्ट होने पर भी लोग आनंद से भरकर खूब हँसते हैं। जो चीज बाहर से कष्ट जान पड़ती हैं, वही भीतर की तरफ से देखने पर आनंद बन जाती है। यह सच है कि साल के ३६५ दिन और एक दिन के २४ घंटों में निरंतर मेरा मनोभाव ऐसा ही नहीं बना रहता, तो भी जिस देश-सेवी जेल-यात्री में यह भावना न्यूनाधिक परिणाम में न होगी, वह न तो कष्ट-सहन द्वारा जीवन को परिपुष्ट कर सकता है और ऐसी अवस्था में मन को संयत रख सकता है।"

"पर यह ख्याल मुझे अवश्य आता है कि अगर इन ११ महीनों में मैं बंगाल की जेलों में रहता, तो न मालूम आध्यात्मिक साधना में कितना अग्रसर हुआ जा सकता, पर वह तो होने वाली नहीं। इसलिए अब मैं भगवान् से यही प्रार्थना करता हूँ—"तुम अपनी पताका जिसको दो, उसे उसके ले चलने की शक्ति भी दो।"

"आज बंगाल से दूर रहने के कारण वह मुझे पहले से भी अत्यंत सुंदर और सत्य जान पड़ने लगा है। स्वर्गीय देशबंधु ने अपनी एक रचना में कहा था—"बंगाल के जल, बंगाल की मिट्टी में एक चिरंतन सत्य निहित है।" अगर मैं एक वर्ष तक यहाँ मांडले की जेल में न रहता तो मुझे उक्त कथन की सत्यता का अनुभव नहीं हो सकता था। अब मुझे बंगाल की शस्य-श्यामला भूमि, वहाँ के मधु-गंध से पूरित आम्रकानन, मंदिरों में धूप आदि का देना, संध्या काल की आरती सबका स्मरण होता रहता है और कल्पना में भी न जाने कितने सुंदर लगते हैं।"

"प्रातःकाल अथवा संध्या के समय जब मैं बादलों के छोटे-छोटे टुकड़ों को सामने से जाते हुए देखता हूँ, तो मन में

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आता है कि 'मेघदूत' के किसी यक्ष की तरह उनके द्वारा अपने हृदय की श्रद्धा-भावना बंग-जननी के चरणों में भिजवा दूँ।"

जेल से रिहाई और पुनः गिरफ्तारी—

मांडले जेल में बहुत अधिक बीमार हो जाने के कारण सरकार ने सुभाष बाबू को छोड़ने का हुक्म दे दिया। कलकत्ता कांग्रेस के अवसर पर (सन् १९२९) आप स्वयं-सेवक दल के कमांडर बनाये गये। उस समय वे फौजी पोशाक में थे और प्रेक्षकों का कहना है कि इतना संगठित और अनुशासित स्वयं-सेवक दल पहले कभी नहीं देखा गया था। इस अधिवेशन में सुभाष बाबू और जवाहरलाल नेहरू ने मिलकर यह चेष्टा की कि कांग्रेस में देश की पूर्ण स्वतंत्रता का प्रस्ताव पास हो जाये। पर महात्मा गांधी और कांग्रेस के सभापति पं० मोतीलाल ने एक वर्ष की मुहलत सरकार को और देने का आग्रह किया, जिससे सुभाष बाबू का प्रस्ताव पास नहीं हो सका।

इसी वर्ष लाहौर जेल में क्रांतिकारी दल के कैदी श्री यतींद्रनाथ ने ६३ दिन तक भूख-हड़ताल करके प्राण दे दिये। इस पर कलकत्ते में बड़ा जोश पैदा हो गया और शहीद के शव को बड़ी धूमधाम से जुलूस निकाला गया। इस अवसर पर सुभाष बाबू ने एक जोशीला भाषण दिया, जिसके कारण आपको गिरफ्तार करके पुनः छह मास के लिए जेल भेज दिया गया।

इस प्रकार कई बार मुकदमा चलाकर जेल भेजते-भेजते जब सरकार थक गई तो, उसने इनको भारत-रक्षा कानून में नजरबंद कर दिया। इस हालत में आपका स्वास्थ्य पुनः खराब हो गया। इस पर जनता ने जब आंदोलन किया तो उन्हें पहले लखनऊ और बाद में मुवाली भेजकर इलाज कराया। पर जब इससे कोई फायदा न जान पड़ा तो सरकार ने प्रस्ताव किया कि वह आपको छोड़ने को तैयार है, बशर्ते आप जेल से निकलते ही इलाज कराने विदेश चले जायें। इष्ट-मित्रों के बहुत समझाने पर उन्होंने इसे स्वीकार किया और एक खास हवाई जहाज द्वारा आपको स्विट्जरलैंड भेज दिया गया।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

विदेश में रहकर भी आपने अपना देश-सेवा का कार्य बंद नहीं किया और यहाँ की राजनीतिक हलचल पर बराबर निगाह रखे रहे। सन् १६३४ में जब महात्मा गांधी ने सत्याग्रह आंदोलन स्थगित कर दिया तो आपने उसके विरोध में एक तार महात्मा गाँधी के पास भेजा। आप इटली जाकर मुसोलिनी और आयरलैंड में डी० बेलेरा से मिले। ये दोनों अपने देश की स्वाधीनता के लिए लड़े थे। सुभाष बाबू ने इनसे अपने भावी कार्यक्रम के विषय में प्रेरणा ग्रहण की।

इसी बीच में आपके पिता बहुत बीमार हो गये। उनकी इच्छा थी कि सुभाष को अंतिम समय में देख लें। इधर सुभाष का हृदय भी उनके दर्शनों को आकुल हो उठा। पर बहुत कुछ प्रयत्न करने पर भी जब सरकार ने उनको भारत लौटने की अनुमति नहीं दी। अंत में सरकारी आज्ञा का उल्लंघन करके भारत आ गये और जहाज से उतरते ही पकड़ लिए गये। तब पिता को देखने के लिए आप इस शर्त पर छोड़े गये कि जब तक देश में रहेंगे, किसी राजनीतिक कार्य में भाग नहीं लेंगे। फिर भी छुटकारे में देर हो जाने से आप समय पर घर नहीं पहुँच सके और उससे पहले ही पिता का देहांत हो गया। इससे सुभाष का हृदय सरकार के प्रति और भी विरोधी भावना से भर गया। पिता का क्रिया-कर्म हो जाने पर आपको फिर विदेश लौटना पड़ा।

दो वर्ष बाद जब वे पुनः भारत को आये तो पुराने आदेश के अनुसार पुनः गिरफ्तार कर लिए गये और डेढ़ वर्ष तक जेल में रहे। अंत में जब सब प्रांतों में कांग्रेसी सरकारें बन गईं, तब आपका जेल से छुटकारा हुआ। सन् १६३८ में हरिपुरा कांग्रेस के सभापति बनाये गए। सन् ३६ का कांग्रेस अधिवेशन त्रिपुरा में हुआ और इस बार भी सुभाष बाबू को ही सभापति चुना गया। पर गांधीजी और कांग्रेस के अन्य प्रमुख नेता समझते थे कि, सुभाष बाबू के विचार अधिक उग्र हैं। इधर योरोपीय महायुद्ध प्रारंभ हो गया था। इसलिए पूर्ण सोच-विचार कर कदम उठाना उचित था। सुभाष बाबू को यह स्थिति पंसद नहीं आई और उन्होंने कांग्रेस को छोड़ दिया।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सन् १६४० में रामगढ़ कांग्रेस के अधिवेशन के अवसर पर सुभाष बाबू ने 'समझौता विरोधी कान्फ्रेंस' का आयोजन किया और उसमें बहुत जोशीला भाषण दिया। इसके बाद अपने 'ब्लेक-हॉल स्मारक' को देश के लिए अपमानजनक बतला कर उसके विरुद्ध आंदोलन छेड़ दिया। सरकार ने इनको पकड़कर फिर जेल में भेज दिया। पर जब वहाँ पर उन्होंने भूख हड़ताल की तो छोड़ देना पड़ा। सरकार ने इनकी माँग को स्वीकार करके 'ब्लैक हॉल' को हटाना स्वीकार कर लिया, पर साथ ही इनको अपने घर में नजरबंद रहने का आदेश जारी कर दिया, जिससे आपका किसी से मिलना-जुलना बंद हो गया।

सन् १६४१ की २५ जनवरी को कलकत्ता की अदालत में सुभाष का मुकदमा पेश होने वाला था। पर उस समय मालूम हुआ कि वे घर को छोड़ कर न मालूम कहाँ गायब हो गये हैं। घर के बाहर पुलिस का पहरा बराबर लगा रहता था, पर सुभाष बाबू वेष बदल कर पहरेदार के सामने ही बाहर निकल गये और उसी वेष में पेशावर पहुँचकर काबुल पहुँच गये। वहाँ से स्थल मार्ग द्वारा ही यात्रा करते हुए जर्मनी पहुँचकर इंग्लैंड के कट्टर शत्रु हिटलर से भेंट की। फिर एक गोताखोर नाव द्वारा आप जापान पहुँचाये गये।

उस समय जापान ने अंग्रेजों द्वारा अधिकृत बर्मा पर आक्रमण करके अपना शासन स्थापित कर दिया था। सुभाष बाबू ने वहाँ जाकर पकड़े हुए भारती सैनिकों तथा अन्य भारतवासियों की आजाद हिंद सेना बनाई और एक 'आजाद हिंद सरकार' भी स्थापित कर दी। इसकी तरफ से अंग्रेजों पर हमला किया गया और इम्फाल (आसाम) में एक बड़ी लड़ाई हुई। कुछ समय बाद अंग्रेजों की कितनी ही नई सेनायें आ जाने से आजाद हिंद सेना को पीछे हटेना पड़ा। इस प्रकार सुभाष बाबू अंग्रेजों को भारत से हटाने की चेष्टा करते रहे, जिसका भारतवर्ष तथा संसार के अन्य देशों पर भी बहुत अच्छा प्रभाव पड़ा। पर अगस्त १६४५ में जब जापान ने हारकर आत्म समर्पण कर दिया तो आजाद हिंद सेना भंग कर दी गई और सुभाष बाबू एक हवाई जहाज में जापान जाते हुए जहाज के गिर जाने से मृत्यु को प्राप्त हुए।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सुभाष बाबू का जीवन-व्रत —

इस प्रकार देश के एक महान् आत्म-बलिदानी के जीवन का अंत असमय में हो गया। इतनी अल्प आयु में और इतनी शीघ्रता से देशवासियों के हृदय में ऐसा उच्च स्थान प्राप्त करने का उदाहरण शायद ही एकाध मिल सके। सुभाष बाबू ने अठारह वर्ष की आयु में ही पिता से यह कहा था—"विवेकानंद का आदर्श ही मेरा आदर्श है," और वास्तव में उन्होंने उसे कार्य रूप में चरितार्थ कर दिखाया। स्वामी विवेकानंद ने भी यौवन में प्रवेश करते ही अपनी समस्त शक्ति, विद्या, प्रतिभा देशवासियों के कल्याणार्थ समर्पित कर दी थी। वे संन्यासी बने थे, पर उस संन्यास-ग्रहण का अर्थ वर्तमान समय के अधिकांश संन्यासियों की तरह बिना कुछ परिश्रम, परोपकार किये दूसरों की कमाई पर सुख का जीवन व्यतीत करना नहीं था। स्वामी विवेकानंद ने देश के उच्च से उच्च पदवीधारी की अपेक्षा अधिक योग्यता और कर्मठता होते हुए भी उसका उपयोग अपने लिए न करके मातृभूमि के उद्धार-उत्थान के लिए किया। यही कारण है कि जहाँ देश अन्य असंख्यों संन्यासियों-स्वामियों को भूल गया, वहाँ इस संन्यासी की शताब्दी समस्त भारतीय राष्ट्र ने अपूर्व उत्साह के साथ मनाई।

सुभाष बाबू ने भी अपना जीवन पूर्ण रूप से इसी आदर्श के अनुकूल सिद्ध करके दिखा दिया। शिक्षा प्राप्त करने के क्षेत्र में अपने परिश्रम और प्रतिभा के बल पर उन्होंने ऊँची से ऊँची परीक्षायें सम्मान सहित उत्तीर्ण कीं और इतनी योग्यता प्रदर्शित की कि लोगों को यह विश्वास हो गया कि अगर वे सरकारी नौकरी करें तो अंग्रेजी राज्य के ऊँचे से ऊँचे पद तक पहुँच सकते हैं। उस दशा में राजा महाराजाओं जैसा जीवन व्यतीत करना उनके लिए सर्वथा संभव था, पर सुभाष बाबू ने उधर आँख भी न उठाकर अपना सर्वस्व, अपार योग्यता और कार्य-शक्ति मातृभूमि के चरणों में अर्पित कर दी। वे देशोद्धार के लिए कैसा पूर्ण आत्म-समर्पण कर चुके थे, इसका कुछ अनुमान उनके इस "निवेदन" से मिलता है, जो उन्होंने मांडले जेल में से 'उत्तरी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कलकत्ता क्षेत्र' के मतदाताओं (वोटरों) के नाम लिखकर भेजा था। श्री सुभाष के राज-बंदी होने पर भी बंगाल की कांग्रेस ने उनको इस क्षेत्र से एक उम्मीदवार के रूप में खड़ा किया था और उसी संबंध में उन्होंने यह निवेदन लिखकर भेजा था—

"मेरे इस अल्प और साथ ही घटनाओं से भरे जीवन के ऊपर होकर जो आँधी-तूफान गुजर चुका है, उसी की कसौटी पर मैं अपने को कुछ जान-पहचान चुका हूँ। इससे मुझे यह निश्चय हो गया है कि युवावस्था के प्रभात काल में ही मैंने जिस कंटकमय मार्ग की यात्रा आरंभ की है, उस पर मैं अंत तक चल सकूँगा। अज्ञात भविष्य को सामने रखकर जो व्रत एक दिन ग्रहण किया था, उसका उद्यापन किये बिना मैं इस मार्ग से पैर न हटाऊँगा। अपने समस्त जीवन के अनुभव और शिक्षा के द्वारा खोज करके मैंने इसी सत्य सिद्धांत को प्राप्त किया है कि "पराधीन जाति का सब कुछ व्यर्थ है, उसकी शिक्षा-दीक्षा, धर्म-कर्म सब व्यर्थ है। यदि उसका उपयोग स्वाधीनता प्राप्त करने के लिए न किया जा सके।"

सुभाष बाबू के उपर्युक्त आदर्श और जिस सच्चाई के साथ उन्होंने जीवन के अंतिम क्षण तक उसका पालन किया, उसे देख-समझकर हम भी अपने पाठकों से यही कहेंगे कि वर्तमान समय में यद्यपि 'देश की पराधीनता' की समस्या हल हो चुकी है, पर उससे भी बढ़कर दूसरी समस्या भारत के नर-नारियों में उनके कर्तव्य-पालन की, सत्य-व्यवहार की, आत्म-त्याग की भावना उत्पन्न करने की है। स्वाधीनता प्राप्त होने से जहाँ हमको इन सब सद्गुणों में उन्नति करके भारत को पुनः 'जगत्-गुरु' की प्राचीन पदवी के योग्य बनाना था, वहाँ निम्न कोटि की स्वार्थपरता और भ्रष्टाचार की दिन पर दिन वृद्धि होते देखकर थोड़े से सच्चे देशसेवकों को बड़ा परिताप हो रहा है। यद्यपि जब से सुभाष बाबू का देहावसान हुआ है तब से लोगों ने बार-बार उनके जीवित होने की चर्चा उठाकर उनके प्रति अपने प्रेम का ही परिचय दिया है। पर इस प्रेम की वास्तविकता को तभी स्वीकार किया जा सकता है, जब हम उन्हीं की तरह अपना स्वार्थ त्यागकर, अपनी शक्ति और साधनों को पूरा नहीं तो उनका कुछ भाग ही देशवासियों के उत्थान के लिए लगाते रहें।

मुद्रक : युग निर्माण योजना प्रेस, मथुरा (उ. प्र.)

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

: युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य- संक्षिप्त परिचय :



ज्यादा जानकारी यहाँ से प्राप्त करें :
http://hindi.awgp.org/about_us

- **विचारक्रान्ति अभियान के प्रणेता :** विचारों को परिस्कृत और ऊँचा उथाने मे समर्थ 3000 से भी अधिक पुस्तकों के लेखन के माध्यम से विश्वव्यापी विचार क्रान्ति अभियान की शरुआत की ।
- **वेद, पुराण, उपनिषद के प्रसिद्ध भाष्यकार :** जिन्हों ने चारों वेद, 108 उपनिषद, षड दर्शन, 20 स्मृतियाँ एवं 18 पुराणों का युगानुकूल भाष्य किया, साथ ही 19 वाँ प्रज्ञा पुराण की रचना भी की ।
- **3000 से अधिक पुस्तकों के लेखक :** मनुष्य को देवता समान, घर-परिवार को स्वर्ग, समाज को सभ्य और समग्र विश्वराष्ट्र को श्रेष्ठ बनाने मे समर्थ हजारों पुस्तकें लिखकर समयानुकूल समर्थ मार्गदर्शन प्रदान किया ।

- **युग-निर्माण योजना के सूत्रधार :** जिन्होंने शतसूत्री युग निर्माण योजना बनाकर नये युग की आधार शिला रखी ।
- **वैज्ञानिक-अध्यात्मवाद के प्रणेता** : जिन्हों ने धर्म और विज्ञान के समन्वय की प्रथम प्रयोगशाला 'ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान' स्थापित कर सिद्ध किया कि "धर्म और विज्ञान विरोधी नहीं, पुरक है "।
- **'२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' के उद्घोषक** : जिन्हों ने '२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' का नारा दिया तथा युग विभीषिकाओं से भयग्रस्त मनुष्यता को नये युग के आगमन का संदेश दिया ।
- **स्वतंत्रता संग्राम के कर्मठ सैनानी** : जिन्हों ने महात्मा गाँधी, मदन मोहन मालवीय, गुरुवर रविन्द्रनाथ टैगोर के साथ राष्ट्र की स्वाधीनता के लिए संघर्ष किया एवं स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी "श्रीराम मत्त" के रुप में प्रख्यात हुए ।
- **गायत्री के सिद्ध साधक** : जिन्हों ने गायत्री और यज्ञ को रुढियों और पाखण्ड से मुक्त कर जन-जन की उपासना का आधार तथा सद्बुद्धि एवं सतकर्म जागरण का माध्यम बनाया ।
- **तपस्वी** : जिन्होंने गायत्री की कठोरतम साधना कर २४-२४ लाख के २४ महापुरश्चरण २४ वर्षो में सम्पन्न किया । प्रकृति प्रकोप को शांत कर अनिष्टों को टाला, सृजन सम्भावनाओं को साकार किया ।
- **अखिल विश्व गायत्री परिवार के जनक** : जिन्हों ने अपने जीवनकाल में ही अपने साथ करोडों लोगों को आत्मियता के सूत्र में बाँधकर विश्व व्यापी 'युग निर्माण परिवार' - 'गायत्री परिवार' का गठन किया ।
- **समाज सुधारक** : जिन्हों ने नारी जागरण, व्यसन मुक्ति, आदर्श विवाह, जाति-पाँति प्रथा तथा परंपरागत रुढियों की समाप्ति हेतु अद्भूत प्रयास किए एवं एक आदर्श स्वरुप समाज में प्रस्तुत किया ।
- **ऋषि परम्परा के उद्धारक** : जिन्हों ने इस युग में महान ऋषियों की महान परंपराओं की पुनर्स्थापना की । लुप्तप्राय संस्कार परंपरा को पुनर्जीवित कर जन-जन को अवगत कराया ।
- **अवतारी चेतना** : जिन्होंने "धरती पर स्वर्ग के अवतरण और मनुष्य में देवत्व के जागरण" की अवतारी घोषणा को अपना जीवन लक्ष्य बनाया और चेतना का ऐसा प्रवाह चलाया कि करोंडों व्यक्ति उस ओर चल पड़े ।

गायत्री परिवार जीवन जीने कि कला के, संस्कृति के आदर्श सिद्धांतों के आधार पर परिवार,समाज,राष्ट्र युग निर्माण करने वाले व्यक्तियों का संघ है। **वसुधैवकुटुम्बकम्** की मान्यता के आदर्श का अनुकरण करते हुये हमारी प्राचीन ऋषि परम्परा का विस्तार करने वाला समूह है गायत्री परिवार। एक संत, सुधारक, लेखक, दार्शनिक, आध्यात्मिक मार्गदर्शक और दूरदर्शी युगऋषि पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी द्वारा स्थापित यह मिशन युग के परिवर्तन के लिए एक जन आंदोलन के रूप में उभरा है।

Free Download Complete Work Of Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya, Founder of All World Gayatri Pariwar Books, Magazines, Articles, Stories, Poems, Great Personalities and many more at
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org